International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 07-08-2021, Accepted: 21-08-2021, Published: 06-09-2021
Volume 7, Issue 5, 2021, Page No. 8-11

# मुन्नी मोबाइल' के चरित्र चित्रण पर भूमंडलीकरण का प्रभाव

**डॉ. सचिन मदन जाधव**

सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग, सद्गुरू गाडगे महाराज कॉलेज, कराड, महाराष्ट्र, भारत

**सारांश**

'मुन्नी मोबाइल' भौतिकवादी जगत का प्रतिनिधित्व करता हुआ एक सर्वसाधारण पात्र हैं. भूमंडलीकरण अपने में पूरे समाज को निगल रहा है. एक साधारण स्त्री पात्र के माध्यम से भूमंडलीकरण किस गति से सामान्य लोगों के जीवन में प्रवेश कर रहा है इसको इस उपन्यास के माध्यम से देखा जा सकता है. भूमंडलीकरण वास्तव में हमारे अंदर की अंतहीन भूख का ही दृश्य रूप है. उपन्यास में इसे विभिन्न पत्रों के माध्यम से बखूबी चित्रित किया है

**मूलशब्द:** मुन्नी मोबाइल, चरित्र, भूमंडलीकरण, प्रभाव

## प्रस्तावना

पात्र वह पहिए होते हैं जिसके माध्यम से कथानक को उद्देश्य तक पहुँचाया जा सकता है। 'मुन्नी मोबाइल' उपन्यास में मुन्नी को मुख्य पात्र के रूप में दर्शाया गया है। उपन्यास की सारी कथा उसके इर्दगिर्द नहीं घुमती फिर भी उसका स्थान सब पात्रों की तुलना में अधिक महत्वपूर्ण माना जा सकता है। वैसे तो पूरा उपन्यास एक भ्रमण है जो सभी पाठक उपन्यास के दूसरे महत्वपूर्ण पात्र आनंदी भारती के साथ करते हैं। 'मुन्नी मोबाइल' कोई चरित्रप्रधान उपन्यास नहीं है। इसलिए किसी विशिष्ट पात्र की चारित्रिक विशेषताएँ उजागर करने के लिए उपन्यास का निर्माण नहीं हुआ। घटनाप्रधान उपन्यासों की यह कमजोरी रही है कि इसमें कोई चरित्र विकसित होता हुआ दिखाई नहीं देता। सारे चरित्र मात्र घटना का वहन करते है।

'मुन्नी मोबाइल' इस उपन्यास को हम एक लंबी और अनिश्चित यात्रा माने तो इस यात्रा में आनंदी भारती हमारे गाईड बनकर उभरते हैं। आनंदी भारती पेशे से पत्रकार है। वो अपने पत्रकार की पैनी दृष्टि से हमें गुजरात दंगों से परिचित कराते है। राजनीतिक चरित्रों को उजागर करते है। अपने राजनीतिक स्वार्थ के लिए राजनीतिक चरित्र किस प्रकार लोगों की धार्मिक भावनाओं को भडकाकर उन्हें सत्ता तक पहुँचने की सीढ़ी बना लेते है। एक तथ्यांकन करनेवाले और मौका मिलते ही बड़े सुरमा नेता (नरेंद्र मोदी को अहमदाबाद दंगों के पश्चात) "आपके कर्म मुझे यहाँ ले आये।"[1] सच्चे पत्रकार के रूप में आनंदी भारती का यहाँ चरित्र उभरकर आता है। लंदन यात्रा के दौरान ग्लोबल वार्मिंग के मुद्दे पर बहस के दौरान अपने भारत का पक्ष रखते हुए इसे विकसित देशों का अविकसित देशों को पिछाडने तथा अपने उत्पादों को खपाने की साजिश के रूप में इसका पर्दाफाश करते है।

मानसी के साथ प्रेमसंबंधों में वे संवेदनशील, भावूक परंतु पंरपरा से दबे हुए और भयग्रस्त प्रेमी के रूप में उभरते है। वे प्रेम तो मानसी से करते

थे लेकिन शादी अपनी बिरादरी की लड़की शिवानी से करते हैं। भाँजी अस्मिता की कॉल सेंटर की नौकरी छूटने से मंदी की मार झेलते कॉल सेंटरों के संदर्भ में खोजी पत्रकारिता चलाकर पूरी सीरिज बनवाते है। मुन्नी मोबाइल की हत्या की खबर सुनकर उनके अंदर का पत्रकार हत्या के तह तक चला जाता है। मुन्नी मोबाइल उपन्यास में भले ही घटनाएँ प्रधान हो लेकिन इस उपन्यास का आनंद भारती एक मात्र ऐसा पात्र जिसमें चरित्र प्रधानता दिखाई देती है। चरित्र प्रधान पात्रों की एक विशेषता होती है कि वो घटनाओं के अनुसार नहीं चलते। इसलिए 'मुन्नी मोबाइल' उपन्यास में आनंद भारती के चरित्रता में एक तरलता और समतलता दिखाई देती है। पत्नी शिवानी ने तलाक देने के लिए एक लाख रूपये की माँग की तो उसके लिए भी वे बिना लागलपट के तैयार हो गए और तलाक के पश्चात भी वो पत्नी को अपनाने की पहल करते हुए दिखाई देते है। मुन्नी मोबाइल के साथ भी बहुत बार तू-तू-मैं-मैं होने के पश्चात भी वो हर बार उसकी मदत करने के लिए तत्पर रहते थे। एक बार तो मुन्नी मोबाइल ने स्वयं के जीवन की तुलना आनंदी भारती से करते हुए अपने को सफल और उनको विफल सिद्ध कराते हुए तू तडाक बातें कहीं। लेकिन फिर भी मुन्नी मोबाइल के संघर्ष से वे प्रभावित रहें। उसकी हत्या की घटना से व्यथित हुए। मुन्नी मोबाइल की हत्या के कारणों की तह तक चले गए इतना ही नहीं उसके परिवार के अन्य सदस्यों के वर्तमान के बारे में भी जानकारी हासिल की।

इस उपन्यास का दूसरा महत्त्वपूर्ण पात्र है- 'मुन्नी'। लेखक ने बहुत हद तक इसे अपने उपन्यास के केंद्र में रखा है। उपन्यास का अधिकतर कथानक 'मुन्नी मोबाइल' के जीवन विकास से जुडा है। उपन्यास में मुन्नी के जीवन चरित्र का आंतरिक कम परंतु भौतिक रूप मे अधिक विकास हुआ है। भौतिकता की होड उसकी आंतरिकता को इतना तीव्रतर और जीवन को इतनी तेज रफ्तार देता है कि अंत में वो एक दुर्घटना का शिकार हो जाती है। अगर उसकी आंतरिकता को और जीवन को ठीक ढंग से समझा जाए तो मुन्नी मोबाइल की हत्या एक दुर्घटना न होकर उसके जीवनी की नियती सिद्ध होगी। वैसे उपन्यास में मुन्नी का चरित्र आंरभ की कुछ घटनाओं में ही स्पष्ट हो जाता है जब वो शशि खोखरा के नर्सिंग होम में अवैध गर्भपात कराने में हाथ बँटाती थी। मुन्नी के जीवन का संघर्ष न तो सत्य के लिए है न ही नैतिकता से प्रेरित है। उसका सारा जीवन भौतिकता से प्रेरित है। उसमें कुछ हद तक स्वाभिमान को देखा जा सकता है लेकिन संपूर्ण जीवन संघर्ष मात्र भौतिकता से ही प्रेरित माना जा सकता है। अर्पण कुमार ने मुन्नी मोबाइल के चरित्र को बखुबी आँका है- "पहले झुग्गी-झोपड़ी में और फिर जमीन खरीदकर और मकान बनाकर छह-छह बच्चों को अपने मजदूर पति की छोटी कमाई में किसी तरह पालती-पोसती मुन्नी कभी स्वेटर बुनकर कुछ कमाई कर लेती है तो कभी चोरी छिपे और नाजायज तरिके से गर्भपात करानेवाली झोला-छाप महिला डॉक्टर के यहाँ हाथ बटाती है, उसके लिए केस लाती है और बदले में कमीशन लेती है। घोर व्यावहारिक और निरंतर नई प्रकृति के काम पकड़ लेनेवाली मुन्नी अव्वल दर्जे की दुस्साहसी है।"[2]

उपन्यास में मुन्नी मोबाइल एक तरक्की पसंद स्त्री है। उसके सामने जो रास्ता उपलब्ध हो जाए वो उस रास्ते पर चलने के लिए तैयार रहती है। जब उसके हाथ कुछ नहीं था तब उसने क्रोशिया चलाकर अपनी पहली कमाई पचास रूपये हासिल की। उसके सपने खिलने लगे। "उसे लगा अब टीवी से लेकर फ्रिज तक सब उसके घर में आ जाएगा। बाहरी दुनिया के साथ उसका यह पहला मेल मिलाप उसे खूब भाया। बच्चों को पालने के बीच वह और ज्यादा समय तलाशने लगी। पचास

रूपये से उसकी कमाई पाँच सौ तक पहुँच गई।"[2] उसकी पचास रूपये की पहली कमाई वह उंगली थी जिसको पकड़कर उसने भौतिकता का पूरा हाथ थामा था और जिसको आजीवन उसने पकडे रखा। जब उसे महसूस हुआ कि बुनाई से ज्यादा पैसे डॉ. शशि खोखरा के साथ नर्स का काम करने में है तो वो इस काम में जुट गई। अवैध गर्भपात के संदर्भ में रात में नर्सिंग होम में रूकने से उसे सौं रूपये मिलते। जच्चा-बच्चा करने के लिए उसे कोई बुलाता तो एक दिन का पाँच सौं रूपये फिस लेती। लेकिन इससे अधिक पैसे उसे अवैध रूप से गर्भपात कराने के लिए मरीज लेकर आने पर कमीशन के तौर पर मिल जाते है तो वो उसके पीछे पड़ गई। साहिबाबाद में डॉ. आराधना के नर्सिंग होम में अधिक कमिशन की लालच में वो मरीज भेजने लगी। जब डॉ.शशि खोखरा को इस बात की खबर लगी तो मुन्नी का नर्स का काम भी हाथ से निकल गया। लेकिन तब तक उसकी आमदनी प्रति माह दस हजार के आस-पास पहुँच गई थी।

जीवन की जरूरतों ने उसे नए काम की खोज मे लगा दिया। वह झाडू पोछा का काम करने लगी। आनंद भारती के यहाँ काम करते हुए उसने बेहतर खाना बनाना सीख लिया। काम ढूँढते वक्त वह ऐसे ही घरों को पकड़ती जहाँ काम कम हो और आमदनी भी ठीक हो। धीर-धीरे वह उसने आनंद भारती के घर में ही घरेलु काम करनेवाली नौकरानियों का अघोषित ब्युरो खोल दिया। उसमें भी उसे बढ़िया कमिशन मिल जाता। उसकी आमदनी भी बढ़ गई थी। अब वो कोई नया काम करना चाहती थी जिसमें दिन की कमाई ही हजारों में हो इसलिए उसने बस खरीद ली और गाजियाबाद पहाडगंज रास्ते पर पैंसेंजनर बस के रूप में दौडाना शुरू किया। उसकी इस यात्रा को वर्णित करते हुए अर्पण कुमार लिखते है, "क्रमश: ऊपर की सीढ़िया चढ़ती और भटकती, हर तरह के दाँव-पेच में वह माहिर होने लगती है और प्रभुतासंपन्न स्थानीय ठेकेदारों, रंगदारों, पुलिस थानों से लड़ती-झगड़ती, तरह-तरह की सांघातिक स्थितियों को सहती, उनकी काट सोचती कई बसों की मालकिन बन जाती है और चौधराइन की संज्ञा पाती है।"[3] धीरे-धीरे वह बस मालकिन से गाजियाबाद टर्मिनल की ठेकेदार भी बन गई। इस बीच उनके नौकरानियों की सप्लाई का काम छोड दिया।

बस के धंदे में उसे पैसे तो बहुत मिलते थे लेकिन रोज की खिटपीट जारी थी। सबका हिसाब रखना पडता था। मुन्नी को पैसे तो मिल रहे थे परंतु कमीशन में जो सहजता होती है वो इस धंदे में नहीं थी इसलिए उसे ऐसा धंदा चाहिए था जो पैसे तो बहुत दे लेकिन खिटपीटवाला काम न हो। ऐसी ही सोच ने उसे एक सेक्स रॅकेट की कमिशन एजंट बना दिया। धीरे-धीरे वह इस मायाजाल के गिरफ्त में धँसती चली गई। उपन्यास के आरंभ में डॉ. शशि खोखरा के साथ जिस प्रकार वह अवैध व पतनोन्मुख धंदे की ओर अग्रेसर हुई थी। अंत में उसी प्रकार की या यों कहे कि उससे भी भयानक और खाई में जानेवाले रास्ते पर वह चल निकली। मात्र अर्थिक उन्नति जिनके जीवन का लक्ष्य हो उनका पतन होना स्वाभाविक है। मुन्नी मोबाइल का सेक्स रॅकेट के धंदे में सरगना तक का सफर उसकी इसी भौतिक प्यास का ही परिणाम है। भारतीय समाज में एक कहावत बड़ी प्रचलित है- 'गंदा है पर धंदा है।' मुन्नी मोबाइल में यही सोच चरम पर दिखाई देती है। वह जानती थी कि ये रास्ता सही नहीं है। लेकिन आर्थिक कमाई का बहुत बड़ा जरिया था इसीलिए मुन्नी मोबाइल ने इसको स्वीकारा। आनंदी भारती ने मुन्नी का जीवन संघर्ष देखा था इसलिए इस प्रकार का पतन से वे व्यथित हो गए। "मोबाइल की माँग से लेकर हस्ताक्षर करने तक का सफर बच्चों की पढ़ाई से लेकर बेटी रेखा के लिए

कम्प्युटर ले जाने की उसकी हसरत....फिर नौकरानियों की सप्लाई से लेकर कॉल गर्ल की सप्लाई का काम.....मुन्नी के संघर्ष से लेकर सफल होने तक की इंद्रधनुषी यात्रा बदरंग हो गई थी।"[4] इस प्रकार की पतन से वे व्यथित हो गए लेकिन मुन्नी के शुरूवाती जीवन को गौर करेंगे तो मुन्नी का अंत दुर्घटना के बजाय अंजाम के रूप में दिखाई देता है।

मुन्नी मोबाइल की हत्या के बाद उसकी बेटी रेखा जिसमें मुन्नी अपना अक्स देखती थी और कभी इसको बड़ा अफसर बनाने का सपना उसने देखा था आज वह मुन्नी मोबाइल के रास्ते पर ही चल रही थी। उसने अपने ज्ञान का उपयोग इस धंदे को आधुनिक ढंग से चलाने में किया था। रेखा का यह विकसित रूप मात्र रेखा का रूप नहीं है यह मुन्नी मोबाइल के जीवन की मृत्युपश्चात की यात्रा है। अगर मुन्नी जीवित होती और उसे कम्प्युटर का ज्ञान होता तो वो भी अपने धंदे को ऐसे ही चलाती। इसलिए उपन्यास में मुन्नी की हत्या से मुन्नी का लौकिक रूप में अंत हुआ। लेकिन मुन्नी जैसी भौतिकवादी लालसा रखनेवालों के रूप में उसके उत्तराधिकारी निरंतर पतन की खाई की ओर अग्रेसर होते रहेंगे।

उपन्यास में आनंद भारती तथा मुन्नी मोबाइल के चरित्र की विकास यात्रा कथानक को आगे बढ़ाने वाले प्रासंगिक पात्रों का भी यथा स्थान उपयोग में लाया गया है। टीटी उर्फ प्रतीक चौधरी, हंसराज चौधरी अपराधी राजनीतिक नेताओं के प्रतिनिधि है। डॉ. शशि खोखरा, डॉ. आराधना डॉक्टरी पेशे के धंदे में तब्दील होने की सूचना देते है। नरेंद्र मोदी, हरेश भट्ट सत्ताखोरी के प्रतिनिधि पात्र बनकर उभरते है। आनंद की प्रेमिका मानसी तथा दोस्त सुधा पांडेय स्वतंत्र व्यक्तित्व व आधुनिक विचारों की स्त्री पात्र के रूप में दिखाई देती है। इंद्रानी मुजूमदार, अनंत कृष्णत सच्चे और अच्छे पत्रकारों के प्रतिनिधि है। इसके अतिरिक्त प्रसंग विशेषों में उभरे हुए कुछ फूटकर पात्र-अस्मिता, जस्सी, सतिंदर आदि पात्र है। सेक्स रैकेट से जुड़े सोनु पंजाबन, अंकित धीर, रितिका ठाकुर, मोनु अग्रवाल, बाबा गोसाई, उषा ठाकूर और पुलिसों का मुखबीर पीपी गुप्ता काली दुनिया के कुछ उजले चेहरों के रूप में सामने आते है।

## निष्कर्ष

आधुनिक मनुष्य के जीवन में व्याप्त बिखराव और भटकाव उपन्यास में जो का त्यो प्रस्तुत किया है। वैसे ऐस बिखराव और भटकाव के आदि और अंत के सीरे को पकडने की कोशिश नहीं करनी चाहिए। यही इस उपन्यास में भी दर्शित होता है। 'मुन्नी मोबाइल' के जीवन की शुरूआत 'बिंदू' रूप में हुई और निरंतर परिवर्तित होते हुए वह 'मुन्नी' व 'मुन्नी मोबाइल' में तब्दील हो गई। उसके जीवन में आये हुए उतार-चढ़ाव सामान्य व्यक्ति के मन में निर्माण होनेवाली भौतिक तरक्की की लालसा से किसी के भी जीवन में घटित हो सकते हैं। इस प्रकार यह उपन्यास आद्योपांत सामान्य लोगों के जीवन का प्रकटीकरण है।

## सन्दर्भ सूची


1. प्र.सौरभ- मुन्नी मोबाइल, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 110002, प्रथम संस्करण,2011, पृ.33
2. http://hindi.webdunia.com दि. 8/5/2021
3. प्रदीप सौरभ, मुन्नी मोबाईल, वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली, 110002, प्रथम संस्करण 2011, पृ.16
4. http://hindi.webdunia.com मुन्नी मोबाइल: अपराध जगत का सच दि. 18/5/2021
5. प्रदीप सौरभ, मुन्नी मोबाइल, वाणी प्रकाशन, दरियागंज नई दिल्ली, 110002, प्रथ संस्करण, 2011, पृ. 155